
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
12th HISTORY
ई- पाठशाला
किसान, ज़मींदार और राज्य
ONE SHOT
पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...
01 OCT 2026 | 03:30 PM
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

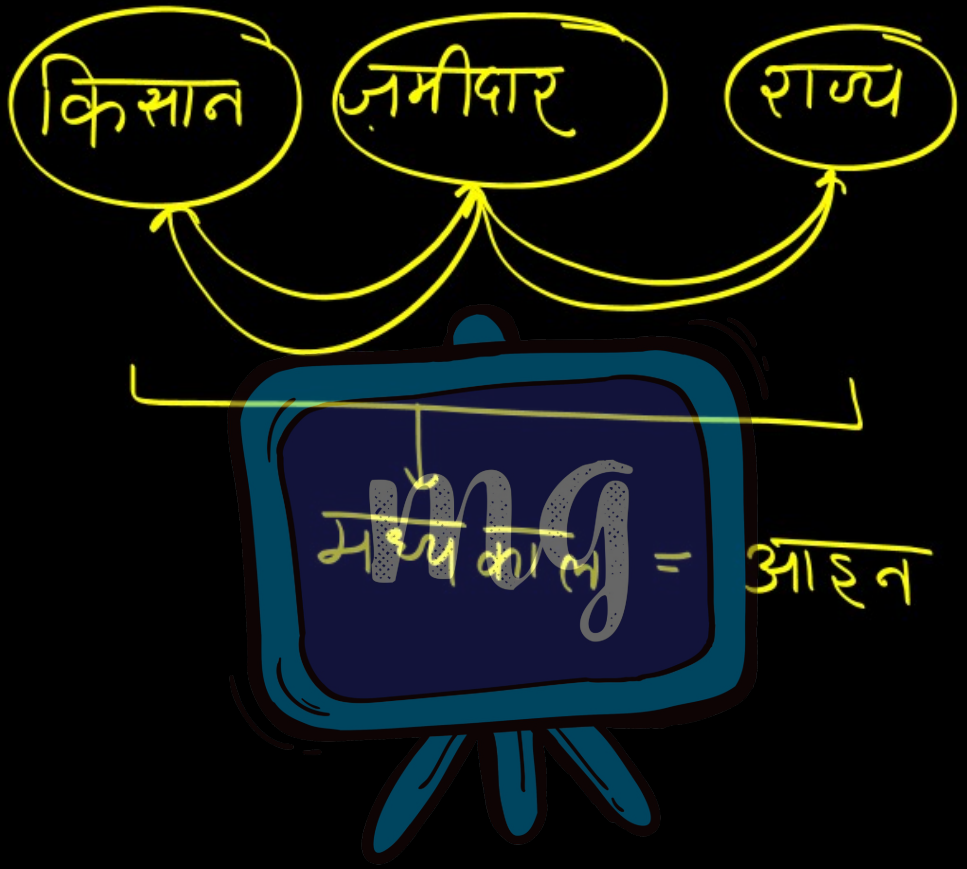

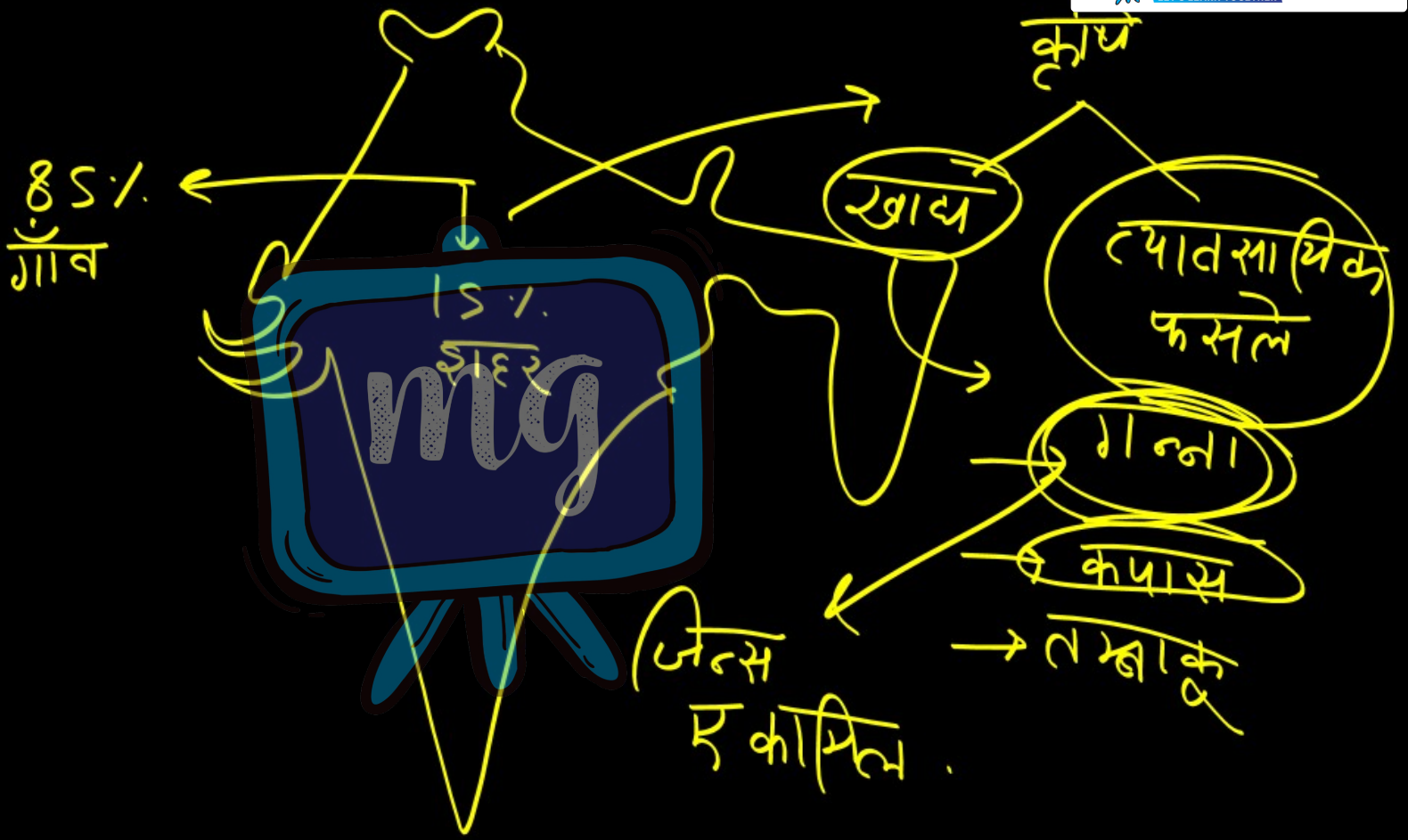
85%
गाँव
15%
शहर
क्रोध
खाद्य
व्यावसायिक फसले
गन्ना
कपास
तम्बाकू
जिन्स एकाग्रित.

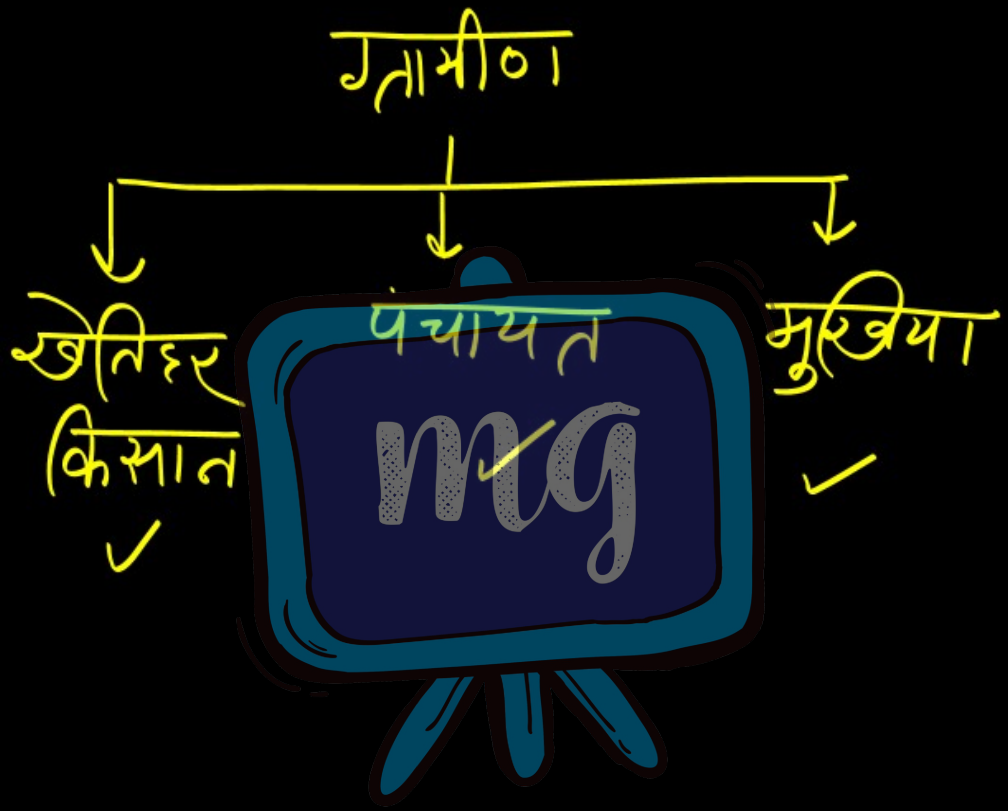
ग्रामीण
खेतिहर किसान
पंचायत
mg
मुखिया

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

किसान और कृषि उत्पादन

- गाँव खेतिहर समाज की मूल इकाई था।
- किसान जुताई, बुवाई और कटाई करते थे।
- कृषि-आधारित वस्तुएँ जैसे शक्कर, गुड़ और तेल भी बनाते थे।
- खेती केवल मैदानी क्षेत्रों तक सीमित नहीं थी।
- सूखी भूमि और पहाड़ी क्षेत्रों में उपजाऊ खेती सीमित थी।

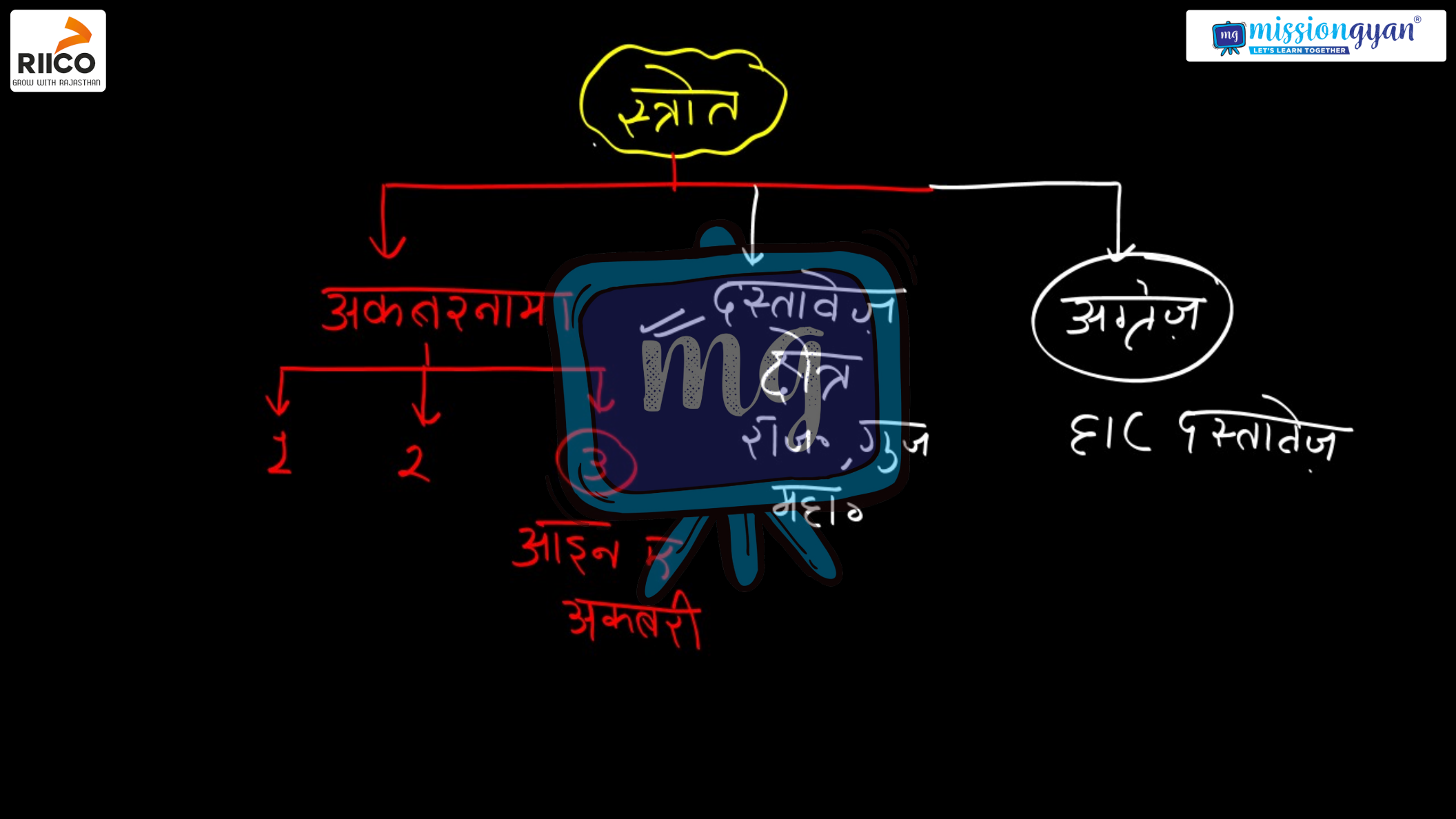

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्त्रोत

- अकबरनामा
  - 1
  - 2
  - 3
    - आइन ए अकबरी
- दस्तावेज़
  - क्षेत्र
  - राज०, गुज
  - महा०
- अग्रेज़
  - हाट दस्तावेज़

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्रोतों की तलाश

- मुख्यतः मुगलकालीन ग्रंथों व दस्तावेजों से मिलती है।
- प्रमुख स्रोत: आइन-ए-अकबरी (अबुल फ़ज़ल)
- कृषि, कर, भूमि-व्यवस्था और ग्रामीण संबंधों
- गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान के दस्तावेज और ईस्ट इंडिया कंपनी के अभिलेख भी उपयोगी स्रोत हैं।
- ये स्रोत किसान–ज़मींदार–राज्य संबंधों और किसानों की राज्य से अपेक्षाओं को समझने में मदद करते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

9. मध्यकालीन भारतीय कृषि को समझने के लिए कौनसे स्त्रोतों का इस्तेमाल किया जाता है?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

किसान और उनकी ज़मीन

- रैयत, मुज़रियान, आसामी शब्द
- सत्रहवीं सदी के स्त्रोत दो किस्म के किसानों की चर्चा करते हैं-

1. खुद-काश्त :- पहले किस्म के किसान वे थे जो उन्हीं गाँवों में रहते थे जिनमें उनकी ज़मीन थीं।
2. पाहि-काश्त :- दूसरे वे खेतिहर थे जो दूसरे गाँवों से ठेके पर खेती करने आते थे। लोग अपनी मर्जी से भी पाहि-काश्त बनते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कुआँ
कुएँ, नहर
होद
जलाशय

सिंचाई और तकनीक

- भोजन हेतु चावल, गेहूँ, ज्वार-बाजरा उगाए जाते थे।
- अधिक वर्षा में चावल, कम वर्षा में गेहूँ व ज्वार-बाजरा।
- मानसून कृषि की रीढ़ था।
- कृत्रिम सिंचाई व नहरों का भी उपयोग होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मध्यकाल में सिंचाई व्यवस्था पर चर्चा करे एवं उदाहरण सहित रहट के बारे में बताइये ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बाबरनामा

रहट

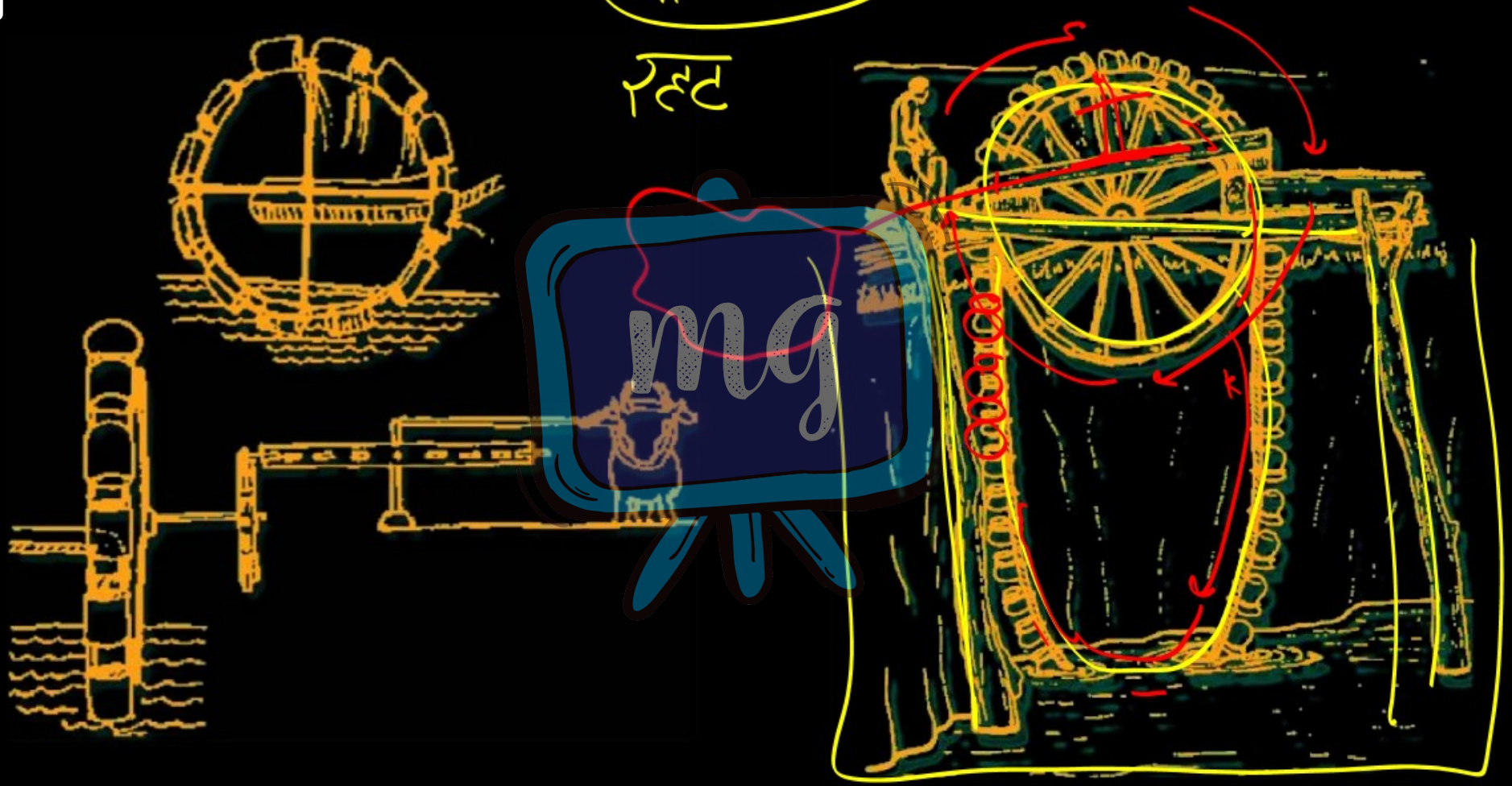

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

फसलों की भरमार

बाहर से आने वाली फसलें ?

- खरीफ और रबी मुख्य फसल चक्र थे।
- सिंचाई वाले क्षेत्रों में तीन फसलें भी होती थीं।
- मुगल भारत में अनेक प्रकार की फसलें उगाई जाती थीं।
- कपास, गन्ना और तिलहन प्रमुख नकदी फसलें थीं।
- मक्का (अफ्रीका और स्पेन) आलू, मिर्च, अनानास व पपीता (अमेरिका) नई फसलें थीं।

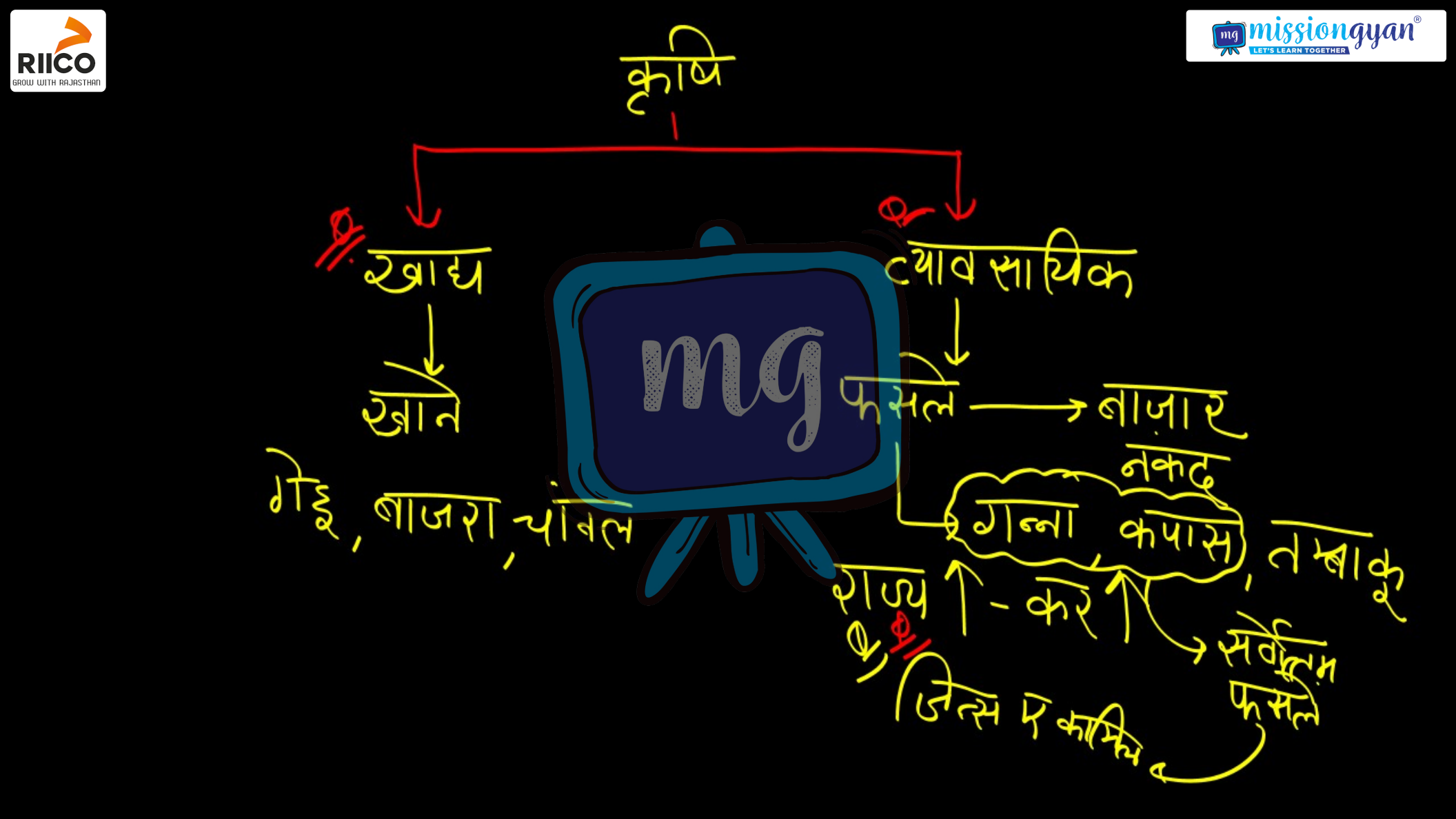
कृषि
खाद्य
खाने
गेहूं, बाजरा, चावल
व्यावसायिक
फसलें
बाज़ार
नकद
गन्ना कपास, तम्बाकू
राज्य
कर
सर्वेक्षण
फसलें
जिन्स पर कानिम

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ग्रामीण समुदाय

- किसान की अपनी ज़मीन पर व्यक्तिगत मिल्कियत होती थी।
- वे एक सामूहिक ग्रामीण समुदाय का हिस्सा थे।

इस समुदाय के तीन घटक थे–

1. खेतिहर किसान
2. पंचायत और
3. गाँव का मुखिया (मुक़द्दम या मंडल)।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जाति और ग्रामीण माहौल

- जाति के आधार पर किसान अलग-अलग समूहों में बँटे थे।
- निम्न जातियों को अक्सर मजदूरी व छोटे काम मिलते थे।
- जाति, गरीबी और सामाजिक हैसियत आपस में जुड़ी थीं।
- कुछ पशुपालक और बागवानी जातियाँ बाद में ऊपर उठीं।

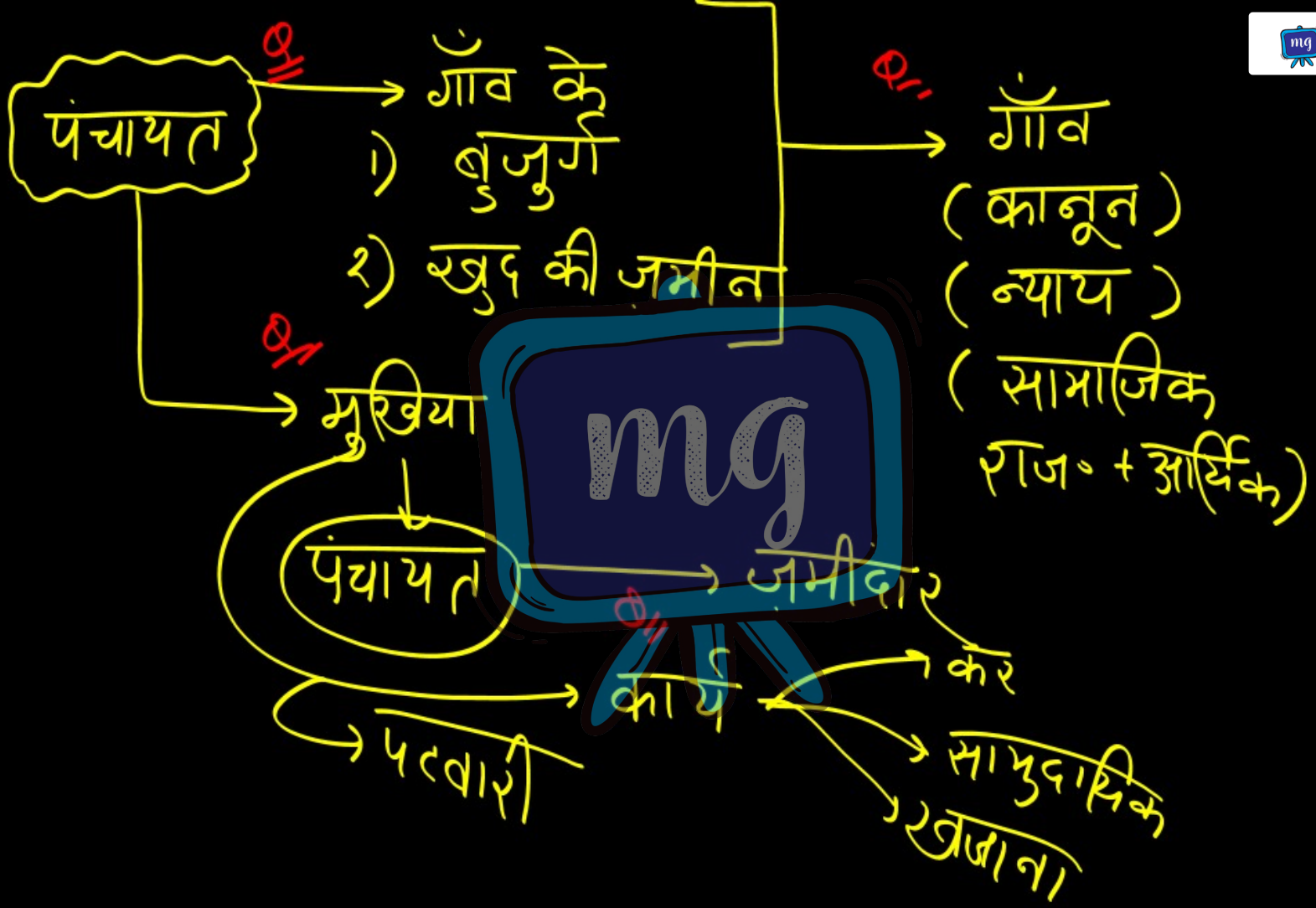
पंचायत
गाँव के
1) बुजुर्ग
2) खुद की ज़मीन
मुखिया
पंचायत
पटवारी
गाँव
(कानून)
(न्याय)
(सामाजिक
राज॰ + आर्थिक)
ज़मीदार
कार्य
कर
सामुदायिक
खजाना

पंचायतें और मुखिया

- पंचायत में गाँव के बुजुर्ग व प्रभावशाली लोग शामिल होते थे।
- पंचायत का प्रमुख मुखिया/मुकद्दम/मंडल कहलाता था
- मुखिया गाँव की आय-व्यय देखता था और पटवारी उसकी मदद करता था।
- पंचायत का खर्च सामूहिक कोष से चलता था।
- पंचायत जाति-नियमों, सामाजिक अनुशासन और विवादों पर नज़र रखती थी।

- दंड में जुर्माना और समुदाय से निष्कासन भी शामिल था।
- हर जाति की अपनी जाति पंचायत भी होती थी; राज्य प्रायः उसके फैसलों को मानता था।
- अत्यधिक कर के मामलों में पंचायत समझौता कराने की कोशिश करती थी।
- समाधान न होने पर किसान गाँव छोड़कर भी जा सकते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

ग्रामीण दस्तकार

- अलग-अलग तरह के उत्पादन कार्य में जुटे लोगों के बीच फैले लेन-देन के रिश्ते गाँव का एक और रोचक पहलू था।
- गाँवों में दस्तकार काफी अच्छी तादाद में रहते थे। कहीं-कहीं तो कुल घरों के 25 फ़ीसदी घर दस्तकारों के थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कभी-कभी किसानों और दस्ताकारों के बीच फ़र्क करना मुश्किल होता था क्योंकि कई ऐसे समूह थे जो दोनों किस्म के काम करते थे।
- रँगरेज़ी, कपड़े पर छपाई, मिट्टी के बरतनों को पकाना, खेती के औज़ारों को बनाना या उनकी मरम्मत करना। उन महीनों में जब उनके पास खेती के काम से फुरसत होती।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुम्हार, लोहार, बढ़ई, नाई, यहाँ तक कि सुनार जैसे ग्रामीण दस्तकार भी अपनी सेवाएँ गाँव के लोगों को देते थे जिसके बदले गाँव वाले उन्हें अलग-अलग तरीकों से उन सेवाओं की अदायगी करते थे।
- उन्हें फसल का एक हिस्सा दे दिया जाता था या फिर गाँव की ज़मीन का एक टुकड़ा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यही व्यवस्था कभी -कभी थोड़े बदले हुए रूप में भी पायी जाती थी जहाँ दस्तकार और हरेक खेतिहर परिवार परस्पर बातचीत करके अदायगी की किसी एक व्यवस्था पर राज़ी होते थे। ऐसे में आमतौर पर वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय होता था।
- उदाहरण के तौर पर, अठारहवीं सदी के स्रोत बताते हैं कि बंगाल में ज़मींदार उनकी सेवाओं के बदले लोहारों, बढ़ई और सुनारों तक को "रोज़ का भत्ता और खाने के लिए अनाज देते थे।" इस व्यवस्था को जजमानी कहते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

एक “छोटा गणराज्य "?

- उन्नीसवीं सदी के कुछ अंग्रेज़ अफसरों ने भारतीय गाँवों को एक ऐसे "छोटे गणराज्य" के रूप में देखा जहाँ लोग सामूहिक स्तर पर भाईचारे के साथ संसाधनों और श्रम का बँटवारा करते थे।
- लेकिन ऐसा नहीं लगता कि गाँव में सामाजिक बराबरी थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ ताकतवर लोग गाँव के मसलों पर फ़ैसले लेते थे और कमज़ोर वर्गों का शोषण करते थे। न्याय करने का अधिकार भी उन्हीं को मिला हुआ था।
- गाँवों और शहरों के बीच होने वाले व्यापार की वजह से गाँवों में भी नकद के रिश्ते फैल चुके थे।
- मुग़लों के केंद्रीय इलाकों में कर की गणना और वसूली भी नकद में की जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- जो दस्तकार निर्यात के लिए उत्पादन करते थे, उन्हें उनकी मज़दूरी या पूर्व भुगतान भी नकद में ही मिलता था।
- इसी तरह कपास, रेशम या नील जैसी व्यापारिक फ़सलें पैदा करने वालों का भुगतान भी नकदी ही होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कृषि समाज में महिलाएँ

- पुरुष खेत जोतते और हल चलाते थे।
- महिलाएँ बुआई, निराई, कटाई और अनाज निकालने का काम करती थीं।
- महिलाओं की जैविक प्रक्रियाओं को लेकर कई सामाजिक पूर्वाग्रह थे।
- कुछ क्षेत्रों में मासिक धर्म के दौरान महिलाओं पर कृषि कार्यों से जुड़ी पाबंदियाँ थीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सूत कातना, मिट्टी साफ करना, बर्तन बनाना और कपड़ों पर कढ़ाई जैसे काम महिलाओं पर निर्भर थे।
- कुपोषण, बार-बार प्रसव और प्रसवकालीन मृत्यु के कारण महिलाओं की मृत्यु-दर अधिक थी।
- इससे कई ग्रामीण समुदायों में विवाह के लिए महिलाओं की संख्या कम हो गई।
- कुछ समुदायों में दहेज के बजाय "दुलहन की कीमत" देने की प्रथा थी।
- परिवार और समुदाय के पुरुषों द्वारा महिलाओं पर मजबूत सामाजिक नियंत्रण रखा जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

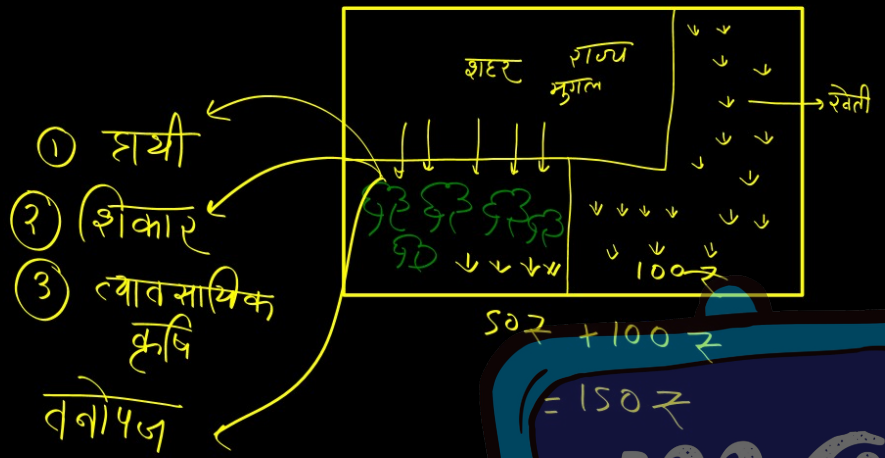

① मछली
② शिकार
③ व्यावसायिक कृषि
वनोपज

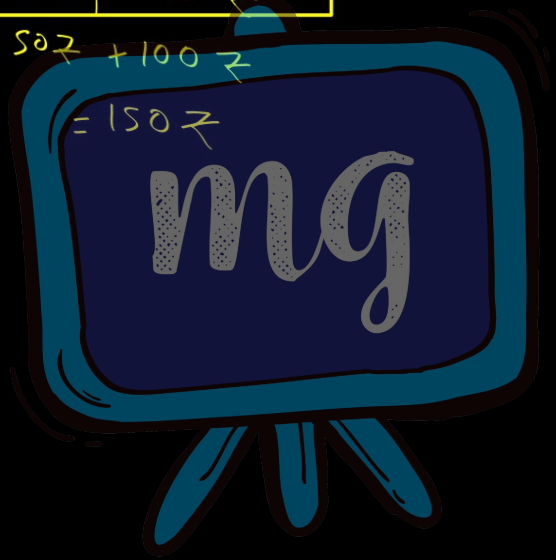

जंगलों में घुसपैठ

- जंगल में बाहरी ताकतें कई तरह से घुसती थीं,

1. हाथियों की जरूरत राज्य को सेना के लिए हाथियों की जरूरत होती थी। इसलिए, जंगलवासियों से ली जाने वाली पेशकश में अकसर हाथी भी शामिल होते थे।
2. शिकार अभियान दरबारी इतिहासकारों की मानें, तो शिकार अभियान के नाम पर बादशाह अपने विशाल साम्राज्य के कोने-कोने का दौरा करता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- वाणिज्यिक खेती का असर भी बाहरी कारक के रूप में, जंगलवासियों की ज़िंदगी पर पड़ता था। जंगल के उत्पाद-जैसे शहद, मधुमोम और लाक की बहुत माँग थी।
- सामाजिक कारणों से भी जंगलवासियों के जीवन में बदलाव आए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- कबीलों के भी सरदार होते थे, बहुत कुछ ग्रामीण समुदाय के "बड़े आदमियों" की तरह। कई कबीलों के सरदार ज़मींदार बन गए, कुछ तो राजा भी हो गये।
- ऐसे में उन्हें सेना खड़ी करने की ज़रूरत हुई। उन्होंने अपने ही खानदान के लोगों को सेना में भर्ती किया; या फिर अपने ही भाई-बंधुओं से सैन्य सेवा की माँग की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

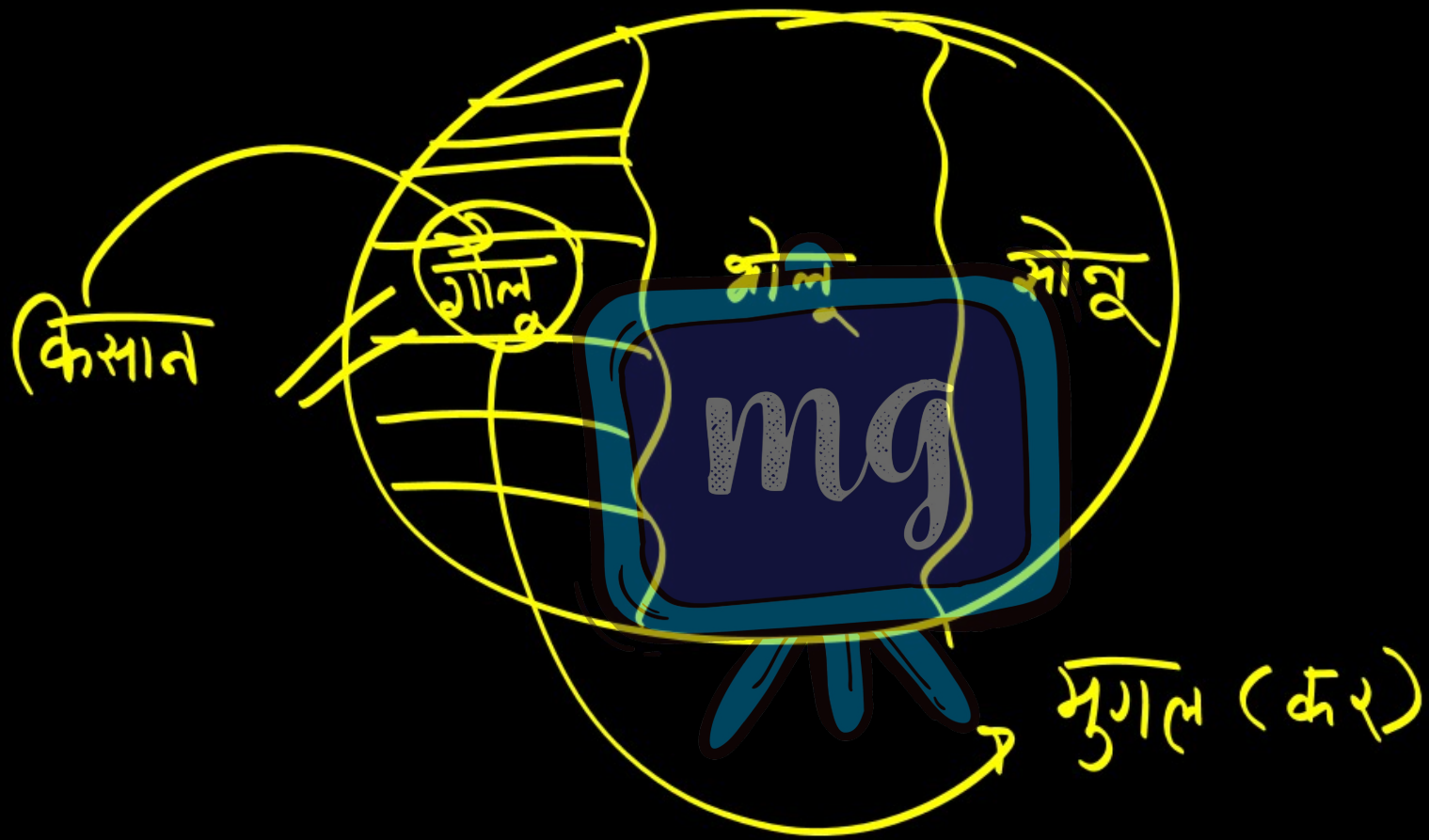

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

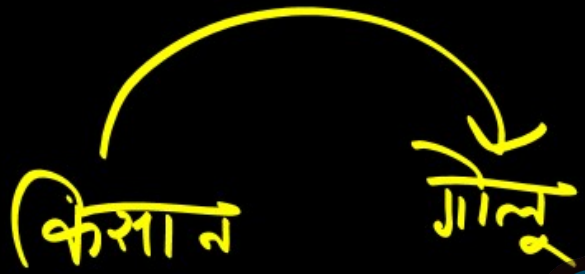

ज़मींदार

- ज़मींदार गाँवों के उच्च सामाजिक-आर्थिक तबके से थे और भूमि के मालिक होते थे।
- वे कृषि उत्पादन में सीधे भाग नहीं लेते थे, लेकिन उनकी आय मुख्यतः खेती से आती थी।
- उनकी ऊँची स्थिति का आधार जाति, भूमि-स्वामित्व और राज्य को दी जाने वाली सेवाएँ थीं।
- उनकी निजी भूमि को मिल्कियत कहा जाता था।
- इन भूमि पर दिहाड़ी या पराधीन मज़दूर काम करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ज़मींदारों के कार्य?

- ज़मींदार राज्य की ओर से कर वसूल सकते थे और बदले में वित्तीय लाभ पाते थे।
- उनके पास किले और निजी सैन्य टुकड़ियाँ भी होती थीं।
- ज़मींदारी खरीदी, अधिकार-हस्तांतरण, राज्य के आदेश या नई भूमि बसाकर प्राप्त की जा सकती थी।
- ज़मींदारों ने नई कृषि भूमि बसाने और किसानों को साधन व ऋण देने में मदद की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- किसानों और ज़मींदारों के संबंध केवल शोषण पर आधारित नहीं थे; उनमें पारस्परिकता और संरक्षण भी था।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

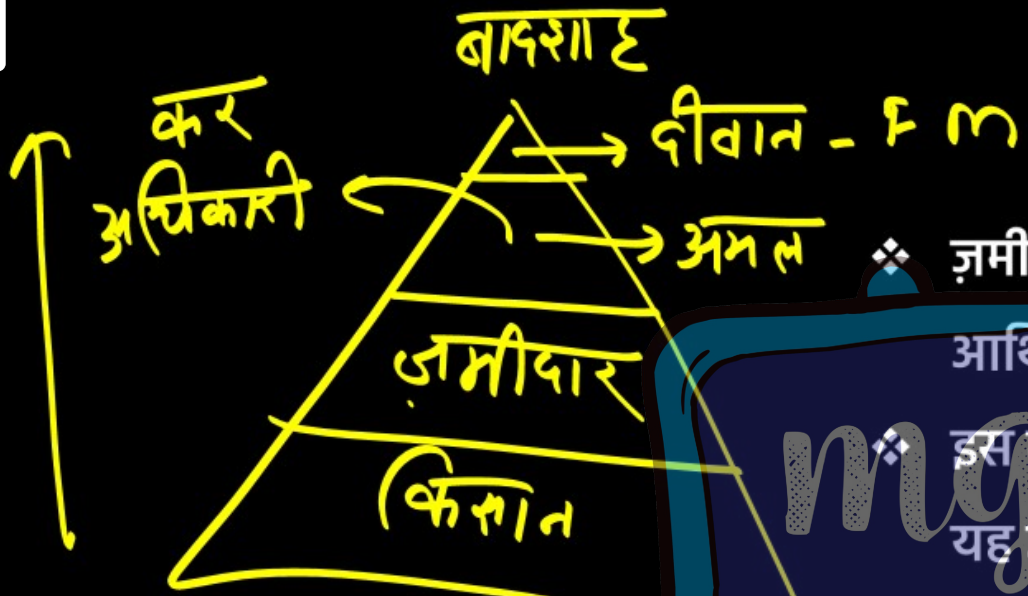

भू-राजस्व प्रणाली

- ज़मीन से मिलने वाला राजस्व मुगल साम्राज्य की आर्थिक बुनियाद थी।
- इस कारण से, राजस्व आकलन व वसूली के लिए यह ज़रूरी था कि राज्य एक प्रशासनिक तंत्र खड़ा करे।
- **दीवान :–** यह भी इस तंत्र में शामिल था। इसके दफ्तर पर पूरे राज्य की वित्तीय व्यवस्था के देख-रेख की ज़िम्मेदारी थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

❖ लोगों पर कर का बोझ निर्धारित करने से पहले मुग़ल राज्य ने ज़मीन और उस पर होने वाले उत्पादन के बारे में खास किस्म की सूचनाएँ इकट्ठा करने की कोशिश की।

पहला, कर निर्धारण → जमा

दूसरा, वास्तविक वसूली → हासिल

भू-राजस्व के इंतज़ामात में दो चरण थे : जमा निर्धारित रकम थी और हासिल सचमुच वसूली गई रकम।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- अमील-गुज़ार या राजस्व वसूली करने वाले अधिकारियों को अकबर ने यह हुक्म दिया कि जहाँ तक उसे (अमील-गुज़ार को) कोशिश करनी चाहिए कि खेतिहर नकद भुगतान करे, वहीं फ़सलों में भुगतान का विकल्प भी खुला रहे।
- राजस्व निर्धारित करते समय राज्य अपना हिस्सा ज़्यादा से ज़्यादा रखने की कोशिश करता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- हर प्रांत में जुती हुई ज़मीन और जोतने लायक ज़मीन दोनों की नपाई की गई।
- मसलन, 1665 ई. में, औरंगज़ेब ने अपने राजस्व कर्मचारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि हर गाँव में खेतिहरों की संख्या का सालाना हिसाब रखा जाए।
- इसके बावजूद सभी इलाको की नपाई सफलतापूर्वक नहीं हुई।
- जैसाकि हमने देखा है, उपमहाद्वीप के कई बड़े हिस्से जंगलों से घिरे हुए थे और इनकी नपाई नहीं हुई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

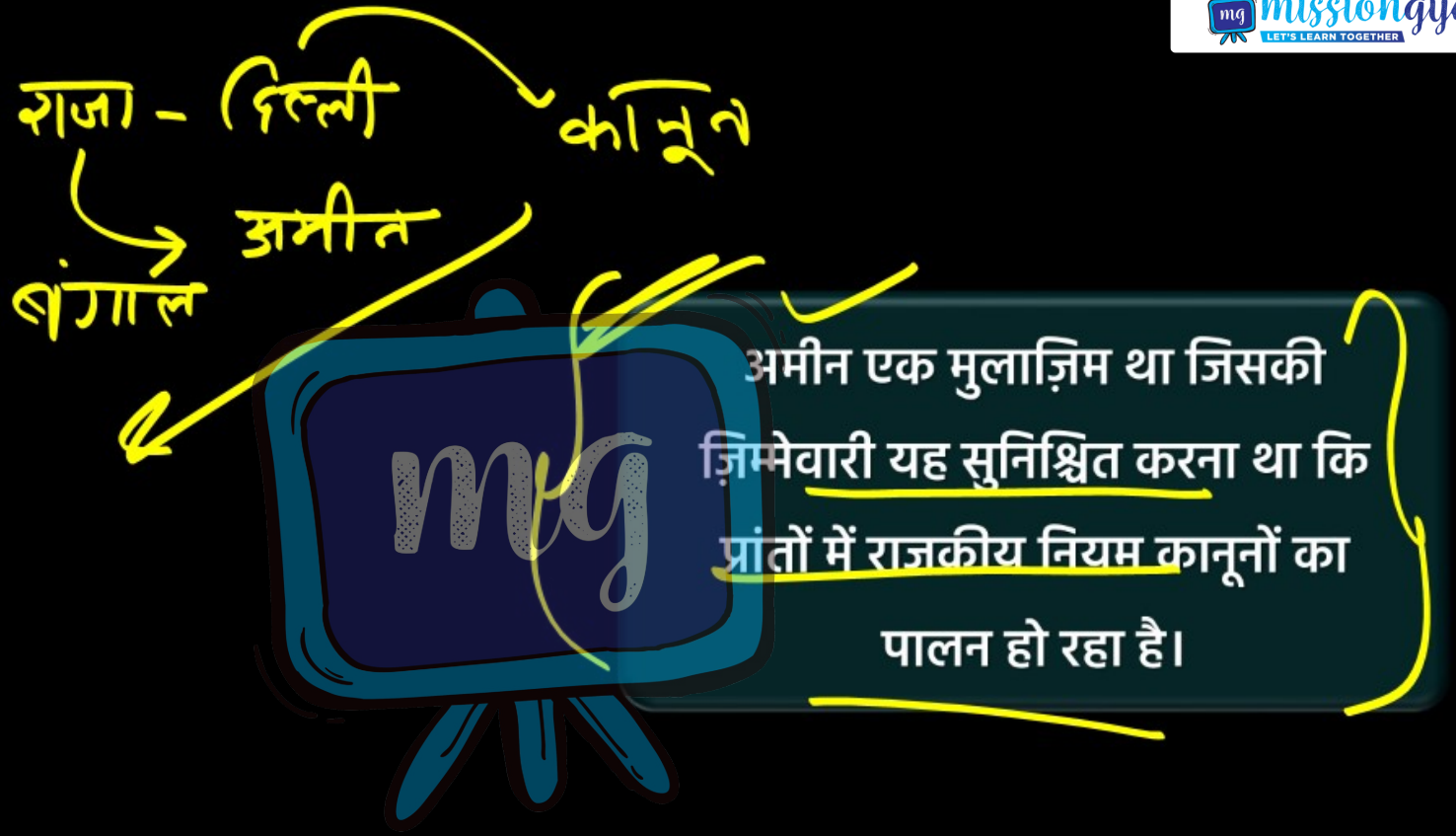

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मनसबदारी व्यवस्था

मुग़ल प्रशासनिक व्यवस्था के शीर्ष पर एक सैनिक-नौकरशाही तंत्र (मनसबदारी) था जिस पर राज्य के सैनिक व नागरिक मामलों की ज़िम्मेदारी थी। कुछ मनसबदारों को नक़दी भुगतान किया जाता था, जब कि उनमें से ज़्यादातर को साम्राज्य के अलग-अलग हिस्सों में राजस्व के आबंटन के ज़रिये भुगतान किया जाता था। समय-समय पर उनका तबादला किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

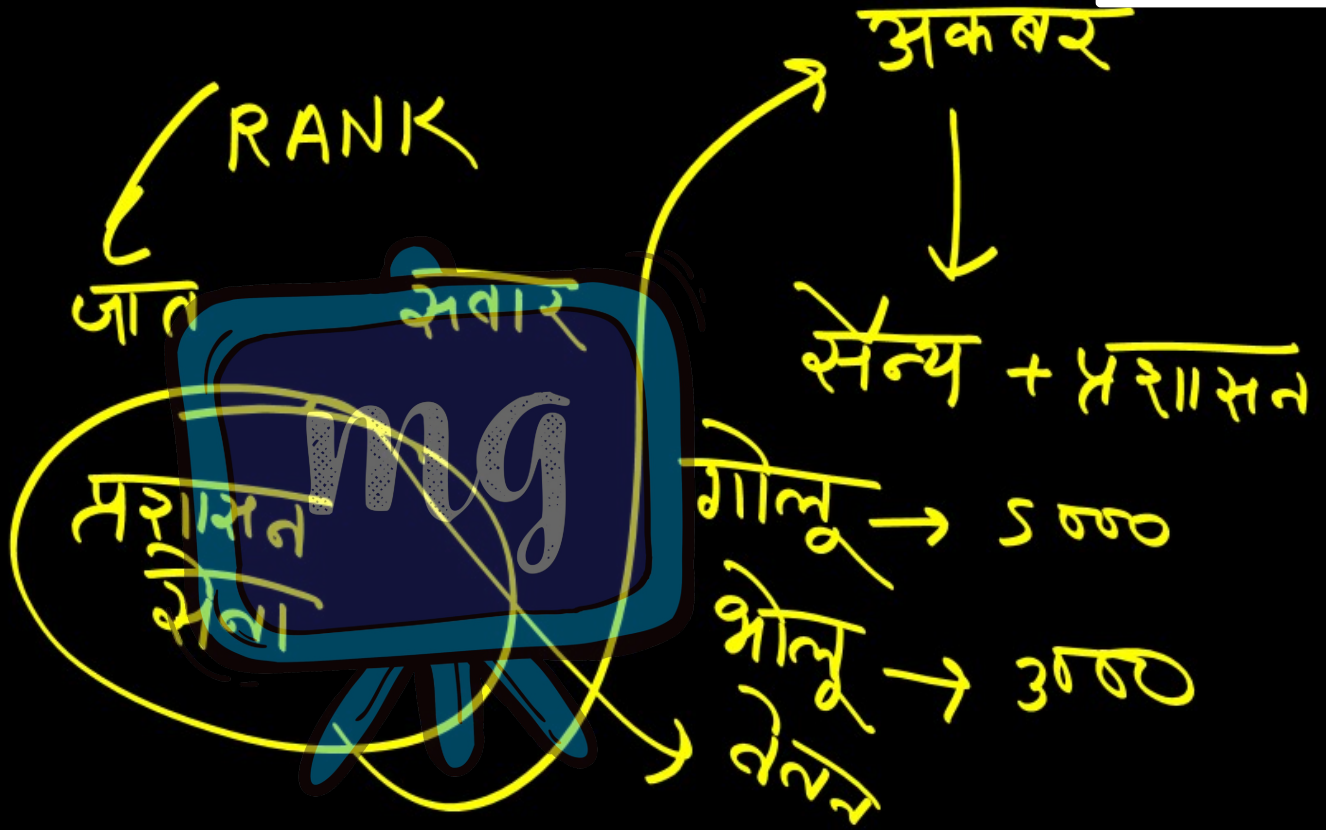

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अकबर के शासन में भूमि का वर्गीकरण

आइन में वर्गीकरण के मापदंड की निम्नलिखित सूची दी गई है:

- अकबर बादशाह ने अपनी गहरी दूरदर्शिता के साथ ज़मीनों का वर्गीकरण किया और हरेक (वर्ग की ज़मीन) के लिए अलग-अलग राजस्व निर्धारित किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- पोलज वह ज़मीन है जिसमें एक के बाद एक हर फसल की सालाना खेती होती है और जिसे कभी खाली नहीं छोड़ा जाता है।
- परौती वह ज़मीन है जिस पर कुछ दिनों के लिए खेती रोक दी जाती है ताकि वह अपनी खोयी ताकत वापस पा सके।
- चचर वह ज़मीन है जो तीन या चार वर्षों तक खाली रहती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बंजर वह ज़मीन है जिस पर पाँच या उससे ज़्यादा वर्षों से खेती नहीं की गई हो।
- पहले दो प्रकार की ज़मीन की तीन किस्में हैं, अच्छी, मध्यम और खराब।
- वे हर किस्म की ज़मीन के उत्पाद को जोड़ देते हैं, और इसका तीसरा हिस्सा मध्यम उत्पाद माना जाता है, जिसका एक-तिहाई हिस्सा शाही शुल्क माना जाता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

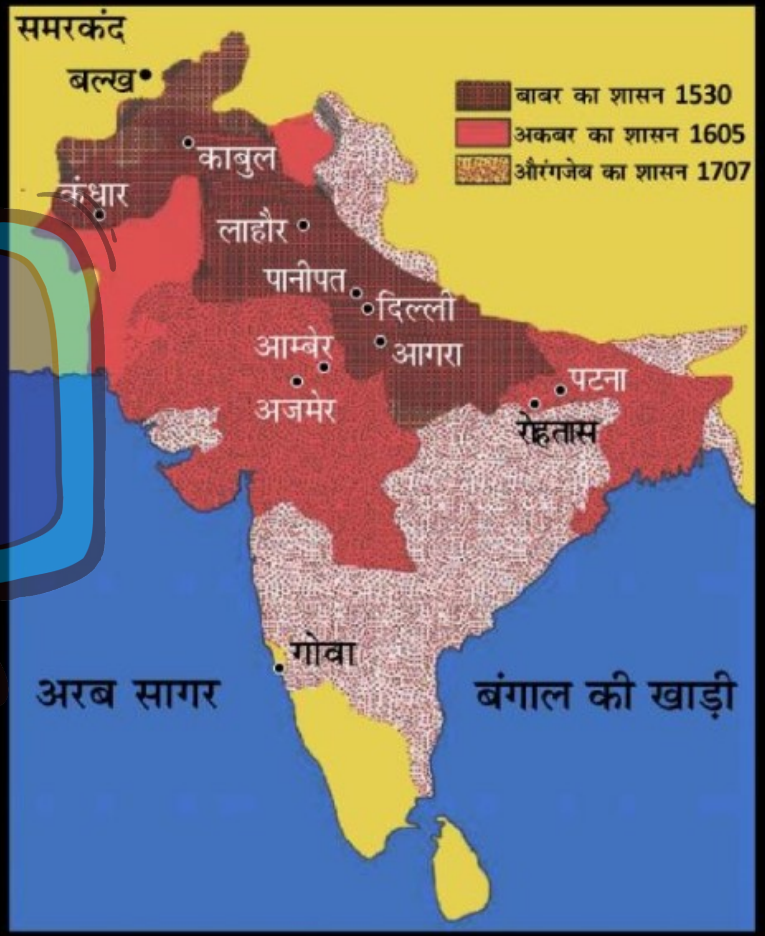

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

चाँदी का बहाव

- मुग़ल साम्राज्य एशिया के उन बड़े साम्राज्यों में एक था जो सोलहवीं व सत्रहवीं सदी में सत्ता और संसाधनों पर अपनी पकड़ मज़बूत बनाने में कामयाब रहे।
- ये साम्राज्य थे-मिंग (चीन में), सफ़ावी (ईरान में), और ऑटोमन (तुर्की में)।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इन साम्राज्यों की राजनीतिक स्थिरता ने चीन से लेकर भूमध्य सागर तक ज़मीनी व्यापार का जीवंत जाल बिछाने में मदद की।
- इस वजह से भारत से समुद्र-पार व्यापार में एक ओर भौगोलिक विविधता आई तो दूसरी ओर कई नयी वस्तुओं का व्यापार भी शुरू हो गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लगातार बढ़ते व्यापार के साथ, भारत से निर्यात होने वाली वस्तुओं का भुगतान करने के लिए एशिया में भारी मात्रा में चाँदी आई। इस चाँदी का एक बड़ा हिस्सा भारत की तरफ़ खिंच गया।
- यह भारत के लिए अच्छा था क्योंकि यहाँ चाँदी के प्राकृतिक संसाधन नहीं थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इटली के एक मुसाफ़िर जोवान्नी कारेरी, जो लगभगर 1690 ई. में भारत से होकर गुज़रा था, ने इस बात का बड़ा सजीव चित्र पेश किया है कि किस तरह चाँदी तमाम दुनिया से होकर भारत पहुँचती थी।
- उसी से हमें यह भी पता चलता है कि सत्रहवीं सदी के भारत में बड़ी अद्भुत मात्रा में नकद और वस्तुओं का आदान-प्रदान हो रहा था।

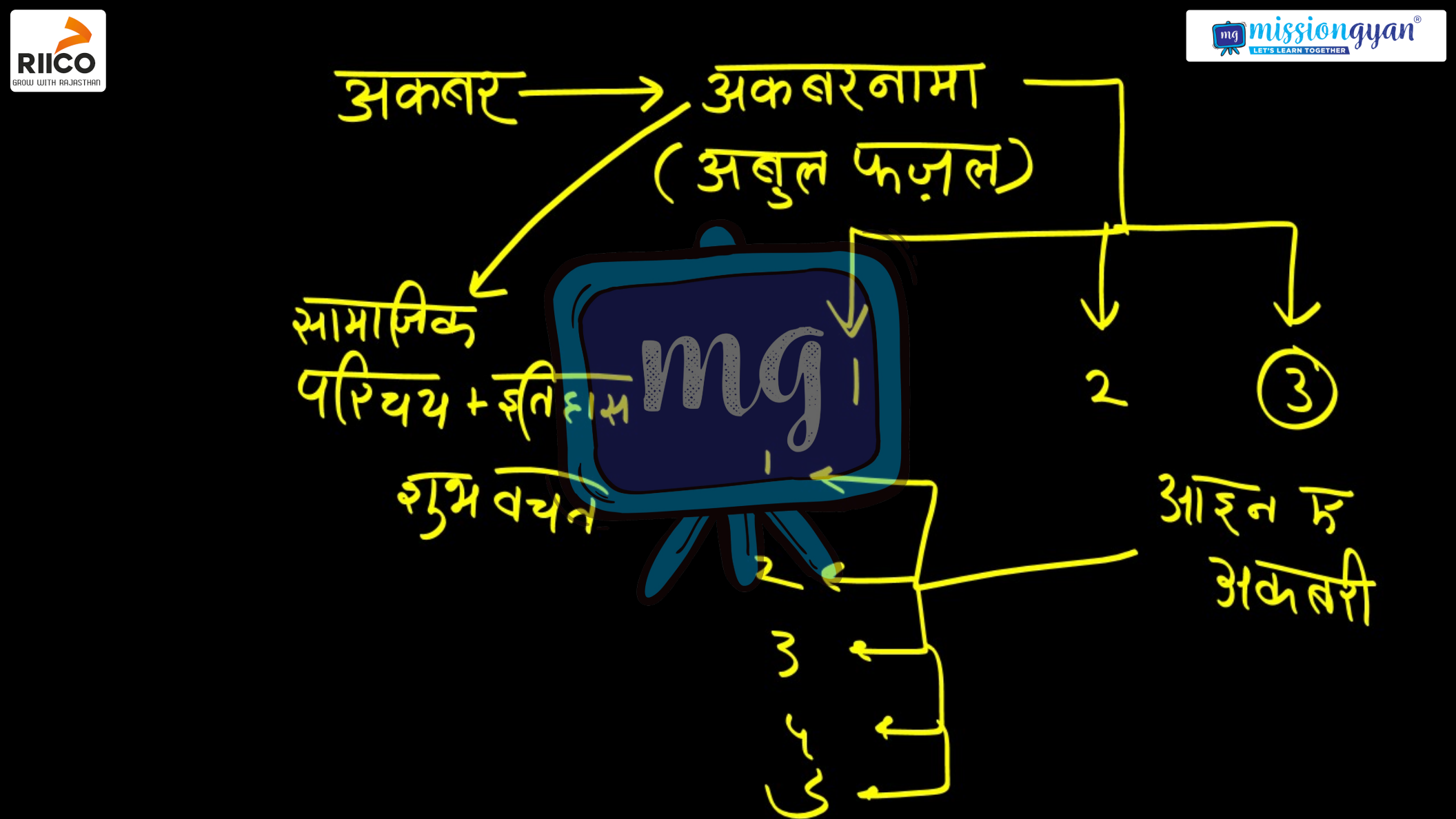
अकबर
अकबरनामा
(अबुल फज़ल)
सामाजिक
परिचय + इतिहास
2
3
शुभ वचन
आइन ए
अकबरी
2
3
5
6

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अबुल फ़ज़्ल की आइन-ए-अकबरी



- अबुल फ़ज़ल - ऐतिहासिक और प्रशासनिक ग्रंथ
- यह अकबरनामा का तीसरा भाग था और इसे बादशाह अकबर के आदेश पर तैयार किया गया।
- अकबर के शासन के 42वें वर्ष, 1598 ई. में पाँच संशोधनों के बाद इसे पूरा किया गया।
- इसका उद्देश्य अकबर के साम्राज्य, प्रशासन और समाज की व्यवस्थित जानकारी प्रस्तुत करना था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- आइन के 5 दफ्तर
- 1. मंजिल-आबादी → शाही घर-परिवार व रख-रखाव
- 2. सिपह-आबादी → सेना, मनसबदार, अधिकारी, विद्वान, कवि व कलाकार
- 3. मुल्क-आबादी → भूमि, राजस्व, प्रांत और वित्त
- 4–5. → धार्मिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक जीवन

+ अकबर के शुभ वचन

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सूबे
↓
सरकार
↓
महल
↓
किला

❖ प्रशासनिक आँकड़े : सूबा → सरकार → परगना/महल → किला → भूमि → राजस्व → ज़मींदार → उनकी जाति व सैन्य शक्ति

❖ सीमाएँ

1. आँकड़ों में कुछ त्रुटियाँ
2. सभी क्षेत्रों की जानकारी समान नहीं
3. कीमत व मजदूरी के आँकड़े मुख्यतः आगरा क्षेत्र के

4. शीर्ष नेतृत्व